REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2025

नेहरु जी और भारत–रुस संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

डॉ. रश्मि सोनी
शिक्षिका, शासकीय माध्यमिक शाला बिरकोना, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश –

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के अंतिम चरण में स्टालिन वादी रुस का दृष्टिकोण भारतीय नेतृत्य के प्रति एक पक्षीय, अविश्वास और पूर्वाग्रही था। नेहरु जी ने लगभग सत्रह वर्षों के अपने कार्यकाल में कई महत्वपूर्ण कार्य किये। उन्होंने स्वतंत्र भारत को एक सबल आर्थिक और राजनीतिक स्वरुप प्रदान किया। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भारत की प्रतिष्ठा को बढ़ाने का श्रेय उन्हीं का जाता है। नेहरु खुश्येव युग में भारत–रूस संबंधों की धनिष्ठता दोनों देशों के नेताओं द्वारा एक–दूसरे के देश की स द्भावना यात्राओं के कारण हुई। जून 1955 में जब सोवियत रूस के निमंत्रण पर नेहरू ने रूसकी यात्रा की तब दोनो देशों में स्थिति बहुत परिवर्तित हो चुकी थी।

शब्दकुंजी – भारत–रुस, संबंध, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि .....इत्यादि।

प्रस्तावना –

जवाहरलाल जी का भारतीय राजनीतिक रंग मंच पर धीमी गति से पदार्पण हुआ। परन्तु भारतीय राजनीति पर उनका प्रभाव अमिट था। नेहरु जी ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अपना विशिष्ट योगदान दिया। नेहरू जी सर्वप्रथम बांकी पुर में होने वाले कांग्रेस अधिवेशन में प्रतिनिधि के रुप में सम्मिलित हुए। सन् 1916 ई. में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन के समय वे गांधी जी के संपर्क में आये और तब से उनके साथ नेहरु जी के संबंध निरन्तर प्रगाढ़ होते गये। गांधी जी के साथ उनके अनेक प्रश्नों पर असहमति होते हुए भी वे भी वे गांधी जी को अपना गुरु, मित्र तथा दार्शनिक मानते थे। व्यक्तिगत रूप में जैसा कि उन्होंने स्वयं ने कहा है कि– ''मैं आपको यह बता सकता हूँ कि जहाँ तक मेरा स्वयं का प्रश्न है, जिन तीन व्यक्तियों ने मेरे जीवन में सबसे अधिक प्रभावित किया है वे हैं मेरे पिता, गांधी जी और रवीन्द्रनाथ ठाकुर।'

15 अगस्त 1947 को जब विभाजन की कीमत पर देश को आजादी मिली तो जवाहरलाल नेहरु स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बनेतथा 27 मई, 1964 तक अर्थात् अपनी मृत्यु के समय तक इस पद पररहे। नेहरु जी ने लगभग सत्रह वर्षों के अपने कार्यकाल में कई महत्वपूर्ण कार्य किये। उन्होंने स्वतंत्र भारत को एक सबल आर्थिक और राजनीतिक स्वरुप प्रदान किया। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भारत की प्रतिष्ठा को बढ़ाने का श्रेय उन्हीं का जाता है।[12]

विषयवस्तु –

भारत–रूस संबंधों की नींव काफी पुख्ता है। 15वीं शताब्दी में अफ नासी निकितन, एफ–एस–.नेफरे मोव जैसे रुसी विद्वानों ने भारतकी यात्रा की। प्रो.हीरेन मुखर्जी के शब्दों में– ''गोकर्की की ऐतिहासिक कृति श्मदरश (माँ) ने बंगाल के कितने ही आतंकवादियों को साम्यवादी विचारधारा का समर्थक बनाया था।

1936 में अपने अध्यक्षीय भाषण में कांग्रेस जनों को सम्बोधित करते हुए नेहरु जी ने कहा–''दो स्पष्ट शिविरों में बंटी हुई दुनिया में हमारा झुकाव किधर है? हमजो एक स्वतंत्र भारत के लिये संघर्ष कर रहे हैं अनिवार्यतः प्रगतिशील तत्वों का समर्थन करेंगे जो फासीवाद और साम्राज्यवाद का विरोध करते ब्रिटिश शासन ने रुसी खतरे को बड़ा भयंकर बना रखा था। जवाहरलाल नेहरू की यह मान्यता थी कि भारत को रूस से कोई खतरा नही है।उनका कहना था कि संघर्ष ग्रेट ब्रिटेन और रूस के बीच में है न कि भारत और रूस के बीच।

स्टालिन वादी रुस और भारत सोवियत संघ संबंध :–

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के अंतिम चरण में स्टालिन वादी रुस का दृष्टिकोण भारतीय नेतृत्य के प्रति एक पक्षीय, अविश्वास और पूर्वाग्रही था।''

द्वितीय विश्व युद्धोत्तर सोवियत रूस के नेतृत्व ने भारत की गुटनिरपेक्षता को प्रारंभ में संदेह की दृष्टि से देखा था। ब्रिटिश राष्ट्र मण्डल में बने रहने संबंधी भारत के निर्णय ने उनकी इस धारणा को और भी पुख्ता कर दिया कि भारत की गुटनिरपेक्षता एक प्रकार का छलावा है। अपने पूर्वा ग्रहों और भारतीय नेतृत्व की वर्ग चरित्र संबंधी व्याख्या के कारण स्टालिन वादी रुस ने भारत के ''गुट निरपेक्षतावाद'' को अस्वीकार कर दिया।

यह सन्देह पूर्वाग्रह और अविश्वास एकपक्षीय ही नहीं था।नवोदित भारत के कतिपय महत्वपूर्ण क्षेत्रों म सोवियत रूस के प्रति अविश्वास, अन्तर्राष्ट्रीय मार्क्स वादी विचारधारा से भय तथा उसकी निरंकुश एकदलीय व्यवस्था से वितृष्णा विद्यमान थी।कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं ने ''सोवियत रूस से सावधान'' की नीति का आह्वाहन किया था। श्रीराजगोपालाचारी ने यहाँ तक कहा था हमें रूस के झूठे बहकावे में कतई नहीं आना चाहिए। यह भारतीय स्वाधीनता के प्रश्नको उलझाये रखना चाहता है।

पट्टामिसीतारम्मैया ने द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् एशिया में उत्पन्न हुई नई स्थिति के परि प्रेक्ष्य में स्पष्ट कहा कि – ''ब्रिटेन की खानगी से उत्पन्न शक्ति शून्यता की पूर्ति हम स्वयं करेंगे। हम भारत राष्ट्र के साथ कटिबद्ध हैं न कि रूस के साथ।''

सन् 1936 में कांग्रेस के अध्यक्ष पद से बोलते हुए नेहरू ने कहा– नव स्वतंत्र भारत की अफसरशाही भी साम्यवादी शैली की सोवियत सभ्यता से बड़ी आशंकित थी। उनमें यह धारणा घर किये हुए थी कि रूस के साथ किसी तरह का खुला संपर्क सुरक्षा और व्यवस्था की दृष्टि से बड़ा भारी खतरा है।

सन् 1951 के पश्चात् भारत–रूस संबंधों में नये युग का सूत्रपात हुआ।जिसका आभास कस की नयी नीति कूटनीतिक गतिविधियों से मिलता है। 1946–47 में उपनिवेशवाद, प्रजातीय विभेद निःशस्त्री करण आदि अनेक प्रश्नों पर दोनों देशों में मतैव्य रहा।सन् 1949 में दोनों देशों के बीच एक व्यापारिक समझौता हुआ।

अप्रैल 1952 में स्टालिन ने भारतीय राजदूत डॉ. राधाकृष्णन से भेंट की और उनके सप्रयत्नों से दोनों देशों में मैत्री पूर्ण संबंधों का विकास होने लगा। अब स्टालिन ने यह महसूस किया कि भारत जैसे गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों के संबंध में ऐतिहासिक निर्यात अथवा युद्ध ''द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी व्याख्या'' से परे हट कर देखना अधिक तर्क संगत होगा। भारत के प्रधानमंत्री स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरु ने मतभेदों की गहराई और परिसीमा को समझते हुए भी भारत–रूस के बीच सौहार्द पूर्ण संबंधों की उपादेयता पर जोर दिया।

कंपनी पुस्तक.''डामेस्टिक कम्पलसंस एण्ड फॉरेन पॉलिसी'' में अश्विनी कुमार रे ने ठीक ही लिखा है कि गैर साम्यवादी संसार में नेहरू ही संभवतः पहले कूटनीतिज्ञ थे जिन्होंने नवजागृत राष्ट्रों और साम्यवादी दुनिया के बीच सह–अस्तित्व की संभावनाएं देखी थी।

संक्षेप में स्वतंत्र भारत के प्रति काफी समय तक साम्यवादी गुट–विशेष कर चीन और रूस का दृष्टिकोण मैत्री पूर्ण नहीं था। स्टालिन भारत जैसे गुटनिरपेक्ष राष्ट्र को ''पश्चिम का पिछ लग्गू'' समझता था।वस्तुतः 1954 तक भारत और रूस में बहुत कम औपचारिक संबंध थे।

भारत–रूस संबंध सक्रिय सहयोग का युग :–

सन् 1954 के बाद भारत–रूस संबंधों में परिवर्तन आने लगा।इसके निम्नलिखित कारण थे–

(1) स्टालिन की मृत्यु के बाद रूसी नेता शांति पूर्णसह–अस्तित्व की नीति में विश्यास करने लगे थे और लौह आवरण की नीति में परिवर्तन आने लगा था।

(2) रूसी नेताओ ंको अपनी भारत यात्रा के मध्य यह विश्वास हो गया कि भारत का साम्यवादी गुट के प्रति भी मैत्री भाव था और नीतियों की भिन्नता के बावजूद भी ये देश मित्र बने रह सकते थे।

(3) विश्व राजनीति में भारत के कार्यों ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत वास्तव में गुटनिरपेक्षता की नीति का समर्थक था और किसी भी राष्ट्र अथवा गुट का अनुयायी नहीं था।

इसके अलावा द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की परिवर्तित अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति यों में सोवियत रूस एशियाई राष्ट्रों उनमें भी विशेष कर भारत के महत्व की अवहेलना नहीं कर सकता था तथा भारत और रूस अनेक अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर समान विचार रखते थे।

भारत ने भी सोवियत रूस के साथ मैत्री पूर्ण संबंध स्थापित करना उचित समझा, जिसके निम्न कारण थे–

(1) पश्चिमी गुट भारत की निर्गुट नीति के प्रति पूर्ण सहानुभूति नहीं रखता था।अमरीका ने पाकिस्तान को शस्त्र देकर शीत युद्ध बिल्कुल भारत की सीमा पर ला कर छोड़ दिया था।

(2) गोवा के प्रश्न पर सोवियत रूस ने तटस्थता वादी दृष्टिकोण अपनाया था और अमरीका के समान पुर्तगाल अथवा पाकिस्तान का पक्ष नहीं लिया था। इसी प्रकार काश्मीर के प्रश्न पर तो उसने भारत का पूर्ण समर्थ नही किया था।

(3) रूस से अपने संबंध मधुर बनाकर भारत दोनों गुटों के मध्य तनाव कम करने एवं मैत्री बढ़ाने का कार्य अधिक भली प्रकार कर सकता था।

(4) अपने आर्थिक विकास के लिये भारत को सोवियत संघ से तकनीकी और आर्थिक सहायता मिल सकती थी।

नेहरु–खुश्चेव युग और भारत रुस संबंध :–

नेहरु खुश्येव युग में भारत–रूस संबंधों की धनिष्ठता दोनों देशों के नेताओं द्वारा एक–दूसरे के देश की सद्भावना यात्राओं के कारण हुई। जून 1955 में जब सोवियत रूस के निमंत्रण पर नेहरू ने रूसकी यात्रा की तब दोनो ंदेशों में स्थिति बहुत परिवर्तित हो चुकी थी।

7 जून 1955 को नेहरू मारको पहुँचे। महत्व और परिणामों को देखते हुए यह यात्रा ऐतिहासिक रही। जवाहरलाल नेहरु अच्छी तरह समझते थे कि स्वाधीन भारत की सामाजिक प्रगति के लिये विश्व शांति अत्यावश्यक है। इसलिये जवाहरलाल जी की जून 1955 की सोवियत यात्रा को शांति और मैत्री का मिशन ठीक ही माना जाता है। रास्ते में 5 जून को वेकाहिरा में कुछ समय रुके। उन्होंने वहाँ सभा में बोलते हुए कहा कि ''भारत के आम लोग बहुत से क्षेत्रों में आपके साथ सहयोग करना चाहते हैं।इससे हमारे दोनों देशों को कायदा होगा।'' रूस सरकार ने अपना अत्यधिक गुप्त आणविक केन्द्र भी नेहरु को दिखाया जो कि किसी गैर साम्यवादी देश के नेता को कभी नहीं दिखाया गया था।

न्यूयार्क टाइम्स ने अपनी टिप्पणी में लिखा ''सोवियत रुस भारतीय मेहमान के लिये बहुत ही कीमती गलीचा बिछा रहा है। अन्य कूटनीतिज्ञों की तुलना में यह मेहमान वहाँ की साम्यवादी पार्टी और सरकार के लिये बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति है।'' सोवियत रूस की चहुंमुखी प्रगति से अभिभूत नेहरु ने अपनी वापसी पर रूसियों को कहा था.''मैं यहाँ पर अपने दिल का हिस्सा छोड़े जा रहा है।

1955 के दिसम्बर में बुल्गानिन और खुश्चेव की भारत यात्रा ने भारतवासियों पर मनोवांछित प्रभाव छोड़ा तथा ''हिन्दी–रूसीभाई–भाई का नारा'' इन नेताओं द्वारा दोहराया गया।

1955 में ही साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद और रंगभेद के प्रश्नों पर दोनों देशों द्वारा अपनाये गये समान दृ टिकोण ने भी दोनों को और भी प्रगाढ़ मित्र बना दिया।

1955 में हंगरी में सोवियत सैनिक कार्यवाही का भारत द्वारा विरोध किये जाने पर दोनों के संबंधों में कुछ तनाव आया, परन्तु यह तनाव क्षणिक ही रहा। इसके बाद दोनों के मध्य आर्थिक संबंध अनवरत रुप से विकसित होते रहे।

जवाहरलाल नेहरू ने सितम्बर 1961 में सोवियत संघ की दूसरी ओर आखिरी अधिकृत यात्रा की। यह यात्रा पिछली यात्रा जितनी लम्बी न होते हुए भी उससे कम फल प्रदन हीं रही। इस समय तक भारत को प्राप्त होने वाली सारी विदेशी सहायता पश्चिमी देशों से आती थी। पश्चिम पर भारत की निर्भरता को हटाने के लिये अभूत पूर्व सोवियत अभियान शुरु हुआ। इसके फलस्वरूप दोनों देशों के बीच व्यापार में व्यापक वृद्धि हुई। नेहरू के प्रयासों से ही सोवियत संघ ने भारत को 40 से अधिक बड़े कल–कारखानों और दूसरे ठिकानों के निर्माण में सहायता दी जिनमें भिलाई का इश्यात कारखाना, बम्बई की टेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट, अंकलेश्वर के तेल कुएं, रॉची का भारी मशीन निर्माण कारखाना प्रमुख है।

निष्कर्ष –

महत्व और परिणामों को देखते हुए यह यात्रा ऐतिहासिक रही। जवाहरलाल नेहरु अच्छी तरह समझते थे कि स्वाधीन भारत की सामाजिक प्रगति के लिये विश्व शांति अत्यावश्यक है। इसलिये जवाहरलाल जी की जून 1955 की सोवियत यात्रा को शांति और मैत्री का मिशन ठीक ही माना जाता है। 1962 में जब चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया तो रूस चुप रहा जिससे भारत को बड़ी निराशा हुई। दिसम्बर 1962 में सुप्रीम सोवियत में खुश्चेव ने भारत पर चीन के आक्रमण की निंदा की तथा भारत को मिग विमान भी दिया और भारत में सहयोग दिया। संक्षेप में जवाहरलाल नेहरु और खुश्चेव बुल्गा निनकी यात्राओं ने हमारे दो महान शांति प्रेमी देशों के बीच बंधुत्व पूर्ण, अच्छे पड़ोसियों जैसे संबंधों की प्रक्रिया को बढ़ाने और मजबूत बनाने में योगदान दिया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. एस. सी. सिंह, स्वतंत्र राष्ट्रों के संबंध, त्यागी प्रकाशन मेरठ, 184
2. एस. सी. सिंह, स्वतंत्र राष्ट्रों के संबंध, त्यागी प्रकाशन मेरठ, 185
3. जवाहरलाल नेहरु .संघर्ष के दिन, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया 1995, पृ. 296.
4. ऊषा चौधरी नेहरु समय की मांग और चिंतन के नये आयाम, विवेक प्रकाशन दिल्ली 1984, पृ. 58–59.
5. वही, पृ. 60
6. रामदेव भारद्वाज भारत और आधुनिक विश्व, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल 1990, पृ. 223.
7. डॉ. उर्मिला प्रकाश मिश्र एवं आशा मिश्र भारत का इतिहास, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल 1995, पृ. 262–265
8. सच्चिदानंद सिन्हा. ए शार्ट लाइफ स्केच ऑफ जवाहरलाल नेहरु, विश्वभारती प्रकाशन पटना 1936, पृ. 330
9. डोनाल्डई. स्मिथ. नेहरु एण्ड डेमोक्रेसी, पब्लिकेशन्स डिवीजन कलकत्ता 1958, 254
10. एम. एन.दास, द पॉलीटिकल फिलासफी ऑफ जवाहरलाल नेहरु, लंदन 1961, पृ. 304
11. के. टी. कृष्णाचार. द क्विन्टसेन्स ऑफ नेहरु, 1956

डॉ. रश्मि सोनी
शिक्षिका, शासकीय माध्यमिक शाला बिरकोना, बिलासपुर (छ.ग.)